B.A. I (Honours) Sub 24.7.20

I Paper - भारतीय दर्शन

बौद्ध दर्शन :- बौद्धिक निर्वाण [illegible]

बौद्ध दर्शन में निर्वाण [illegible] बौद्धिक उपदेश से विकसित करता है जहाँ निर्वाण की प्राप्ति होता है बौद्धिक जीवन का आदर्श [illegible] निर्वाण की [illegible] जाती है। जिसे दुःख निरोध कहा जाता है जब कारण का ही अन्त हो जाये तो कार्य की उत्पत्ति कैसे होगी। इसे ही दुःख निरोध कही जाती है। इस दुःख-निरोध को बुद्ध ने निर्वाण कहा है। निर्वाण को पाली में निब्बान कहा जाता है भारतीय दर्शन में मोक्ष, मुक्ति या कैवल्य की तरह निर्वाण दुःख निरोध है। जिस प्रकार से दर्शन में मोक्ष कहा जाता है उसी प्रकार बौद्ध दर्शन में निर्वाण की अवधारणा को विकसित किया गया है।

निर्वाण दुःख निरोध है और दुःख तृष्णा से उत्पन्न होता है अतः तृष्णा के निरोध या तृष्णा से मुक्ति ही निर्वाण है। दुःखों का अन्त: इसी संभव है जब इसके कारण का अन्त हो जाये। इस तरह तृष्णा या कामना रूपी कारण का अन्त होने से दुःख रूपी कार्य का समूल नाश हो जाता है।

निर्वाण शब्द के शाब्दिक अर्थ को लेकर बौद्ध दर्शन के दो शाखाओं में बहुत ऊंचा विवाद है। कुछ विद्वानों ने

निर्वाण का शाब्दिक अर्थ बुझना (Blowing out) लिया है कुछ विद्वानों ने इसका अर्थ शीतलता से लिया है। जिन लोगों ने निर्वाण का अर्थ बुझना हुआ लिया है उनके मत को निषेधात्मक मत एवं जिन लोगों ने निर्वाण का अर्थ शीतलता लगाया है उनके मत को भावात्मक मत कहा जाता है।

निषेधात्मक पक्ष के लोग निर्वाण का अर्थ दीपक का बुझ जाने से लिया है जिस प्रकार दीपक के बुझ जाने से उसके प्रकाश का अन्त हो जाता है उसी प्रकार निर्वाण की प्राप्ति से सभी दुःखों का अन्त हो जाता है इस मत को मानने वालों में सर्व प्रथम बौद्ध दर्शन के हीनयान सम्प्रदाय के नाम विशेष रूप से लिया जाता है।

कुछ विद्वान निर्वाण का अर्थ शीतलता से लिया है उनके विचार को भावात्मक विचार कहा जाता है। इस मत के मानने वाले प्रो० मैक्स मूलर, चाइल्डर्स, डा० राधाकृष्णन इत्यादि हैं। बौद्ध दर्शन में वासना, तृष्णा-मोह आग इत्यादि की तुलना अग्नि से की जाती है जहाँ वासना रूपी आग का ठंडा हो जाना ही निर्वाण की अवस्था ~~[illegible]~~ है विनाश की अवस्था है जहाँ शाश्वत आनन्द की अवस्था कहा जाता है। इस अवस्था को बौद्ध दर्शन के महायान सम्प्रदाय के लोग स्वीकार करते हैं।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि बौद्ध दर्शन में निर्वाण सम्बन्धी भावात्मक तथा निषेधात्मक दोनों प्रकार के विचार देखने को मिलते हैं। हीनयान निषेधात्मक पक्ष को स्वीकार करते हैं वहीं महायान भावात्मक पक्ष को स्वीकार करते हैं। हीनयान में निर्वाण को दुःख निरोध, भव निरोध, जन्म मरण निरोध लेकिन भावात्मक पक्ष के मानने वाले लोग निर्वाण को सिर्फ दुःख निरोध की व्यवस्था को स्वीकार नहीं करते बल्कि शाश्वत आनन्द की व्यवस्था के रूप में स्वीकार करते हैं। राजा मिलिन्द के शब्दों में "निर्वाण, जो आध्यात्मिक संघर्ष की सिद्धि है भावात्मक आनन्द की व्यवस्था है।" कुछ विद्वानों के पाली ग्रन्थों में भी निर्वाण को आनन्द की व्यवस्था माना जाता है अभिधम्म में निर्वाण को आनन्द, परम सुख, पूर्ण शांति तथा लोभ घृणा और भ्रम से रहित व्यवस्था कहा जाता है (निब्बानं परमं सुखम्)। अंगुत्तर निकाय में निर्वाण को आनन्द एवं पवित्रता के रूप में लिखा गया है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है बौद्ध दर्शन नैतिक आदर्श के रूप में निर्वाण को स्वीकार करता है निर्वाण के प्राप्ति के बाद सभी प्रकार के दुःखों का अन्त हो जाता है।